आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन

पीएच॰डी॰ उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
संकाय: जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ0 अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

बिनोद करमाली
यू॰जी॰सी॰, नेट/जे॰आर॰एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध प्रारूप
आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन

प्रस्तावना:

झारखण्ड भारत का अभिन्न विविधता वाले राज्यों का परिचायक है। झारखण्ड प्राकृतिक, जनजातीय विभिन्नता एवं सांस्कृतिक रूप से संपन्न राज्यों की श्रेणी में विद्यमान है। विविधताओं का संकेन्द्रण होने के फलस्वरूप यहाँ पर मुख्य रूप से 32 जनजातियाँ पायी जाती है। इस राज्य की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि यहाँ पर जनजातीय समुदाय एवं गैर जनजातीय समुदाय एक परिवार के रूप में वर्षों से निवास करते आ रहे हैं। जनजातीय समुदाय की एक अपनी सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत है। जबकि गैर जनजातीय समुदाय की भी एक अपनी सामाजिक व्यवस्थाएँ रही है परन्तु दोनों समुदाय एक पारस्परिक संबंध स्थापित करके झारखण्ड की प्राकृतिक सुदंरता एवं सांस्कृतिक विरासत के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। भाषायी दृष्टिकोण से झारखण्ड के भाषाओं को मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है-

1. आर्य भाषा परिवार
2. प्रोटोआस्ट्रेलॉयड भाषा परिवार
3. द्रविड भाषा परिवार

आर्य भाषा परिवार (सदानी) के अंतर्गत खोरठा, नागपुरी, कुरमाली एवं पंचपरगनियाँ भाषाएँ विद्यमान है। प्रोटोआस्ट्रेलॉयड भाषा परिवार के अंतर्गत, संथाली, मुण्डारी, हो एवं खड़िया भाषाएँ विद्यमान है। द्रविड़ भाषा परिवार के अंतर्गत कुडुख भाषा विद्यमान है। इन सभी भाषाओं के संरक्षण एवं विकास के लिए झारखण्ड में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची की स्थापना की गयी है। जिनमें जनजातीय भाषाएँ:- संथाली, मुण्डारी, हो, खड़िया एवं उराँव के साथ-साथ

क्षेत्रीय भाषाएँ- खोरठा, नागपुरी, कुरमाली एवं पंचपरगनियाँ भाषाओं की पढ़ाई हो रही है।

खोरठा भाषा एक स्वतंत्र एवं समृद्ध भाषा है जो व्यापक रूप से झारखण्ड के वृहद क्षेत्र में बोली जाने वाली भाषा है। वह जनजातीय समुदाय एवं गैर जनजातीय समुदाय में एक सम्पर्क भाषा के रूप में कार्य करता है। झारखण्ड के 24 जिलों के लगभग 16 जिलों में खोरठा बोली जाती है। इस भाषा को झारखण्ड की द्वितीय राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। खोरठा भाषा की पढ़ाई कक्षा 8 से लेकर ड.। तक होती है, साथ-ही-साथ झारखण्ड की प्रतियोगिता परीक्षाओं में भी खोरठा भाषा की महत्वता बढ़ी है। खोरठा भाषा एवं साहित्य के विविध विद्याओं में गद्य एवं पद्य के अंतर्गत कहानी, कविता, नाटक, उपन्यास, निबंध, संस्मरण, शब्द चित्र, गीत, प्रबंध काव्य लघुकथा इत्यादि विद्यमान है।

आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास का कालक्रम काफी प्राचीन रहा है। इस विद्या के उद्भव एवं विकास में झारखण्ड के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं का प्रभाव रहा है।

प्रेरणा:

मेरा जन्म खोरठा भाषा क्षेत्र के अंतर्गत हुआ है, जिसके फलस्वरूप मेरी मातृभाषा खोरठा है। मेरी प्रारंभिक शैक्षणिक पृष्ठभूमि खोरठा भाषा क्षेत्र में होने के कारण एवं ग्रामीण परिवेश में खोरठा भाषा का व्यवहारिक रूप से प्रयोग में होने के कारण इस भाषा की ओर मेरा झुकाव रहा है। अपनी स्नातक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जब मैं झारखण्ड की प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहा था तो मुझे खोरठा भाषा की उपयोगिता एवं महत्वता का ज्ञात हुआ और मैंने अपना नामांकन जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची के खोरठा विभाग में एम0ए0 पाठ्यक्रम में लिया। इसी क्रम में मैंने खोरठा भाषा एवं साहित्य की विभिन्न विधाओं का अध्ययन किया तो मुझे आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास को

जानने की जिज्ञासा हुई। इसलिए इसपर शोध करने की मेरी योजना बनी, तत्पश्चात् मैंने ''आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन'' विषय का चयन किया।

परिकल्पना:

परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है पूर्व चिंतन। परिकल्पना किसी भी अध्ययन को प्रारंभ करने से पूर्व बनाई गई योजना है। अनुसंधान कार्य परिकल्पना के निर्माण और उसके परीक्षण के बीच की प्रक्रिया है। जिसके अनुसार अनुसंधान कार्य में आने वाली समस्याओं के समाधान से है।

खोरठा भाषा एवं साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्राचीन रही है तथा इतने वर्षों में खोरठा भाषा एवं साहित्य की लगभग सभी विधाओं में शोध कार्य चल रही है एवं कई संपन्न हो चुके हैं। इसी दौरान मैं जब खोरठा भाषा से एम0ए0 पाठ्यक्रम कर रहा था तो मुझे आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन पर शोध कार्य करने की रूचि जगी। क्योंकि मुझे खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास की ऐतिहासिक समयकाल को जानने की जिज्ञासा थी। इस विधा का उद्भव कैसे हुआ? किन परिस्थितियों में हुआ? साथ-ही-साथ वर्तमान परिदृश्य में किस प्रकार से उपयोगी व प्रभावपूर्ण है। इसलिए मैं ''आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन'' के ऊपर शोध कार्य प्रारंभ करना चाहता हूँ।

शोध के उद्देश्य :

- आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास को व्यवस्थित रूप से जानना।
- खोरठा पद्य साहित्य के विभिन्न विधाओं का विवेचन करना।
- खोरठा पद्य साहित्य को वर्तमान सामाजिक परिवेश में सुशोभित करना।

- खोरठा पद्य साहित्य के रचनाओं की महत्वता को लोकजीवन में उजागर करना।
- खोरठा पद्य विधा के कविताओं एवं गीतों में झारखण्ड की प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का अध्ययन करना।
- खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास में लोकगीत एवं शिष्ट गीत के सौंदर्य का गहन अध्ययन करना।

शोध का महत्व:

1. आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास के अध्ययन के माध्यम से लोकजीवन में इस विधा की उपयोगिता को प्रदर्शित करने का कार्य करेगी।
2. शोध से खोरठा भाषा एवं साहित्य समुचित विकास की ओर अग्रसर होगा।
3. इस शोध के माध्यम से खोरठा भाषा एवं साहित्य के नए शोधार्थियों को ज्ञान अर्जित करने की प्रेरणा मिलेगी।
4. इस शोध से आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास के अध्ययन के क्रम में, झारखण्ड की प्राकृतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक पहलुओं को जानने की संभावना जगेगी।
5. आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के उद्भव एवं विकास की चुनौतियों एवं संभावनाओं को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

शोध का समाज में प्रभाव:

1. ''आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन'' शोध से विधार्थी एवं शोधार्थी को नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।
2. इस शोध से आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य के झारखण्ड की प्राकृतिक सौंदर्य, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने का कार्य करेगी।

3. **खोरठाभाषी क्षेत्रों में इस विधा में ज्ञान अर्जित करने में मदद के साथ-साथ झारखण्ड के परिवेश को भी दिखाने का प्रयास रहेगा।**

4. **समाज के रीति-रिवाज, पर्व-त्योहार का खोरठा साहित्य के रचनाओं जैसे गीत, काव्य इत्यादि के माध्यम से सुशोभित करने का कार्य करेगी।**

शोध विधि:

1. **वर्णनात्मक विधि**
2. **विवरणात्मक विधि**
3. **साक्षात्कार विधि**
4. **अनुसूची विधि**
5. **अवलोकन विधि**

उपकरण:

शोध कार्य हेतु निम्नलिखित सामग्री का उपयोग किया जा सकता है-

1. **मोबाईल**
2. **कैमरा**
3. **कम्प्यूटर**
4. **इंटरनेट**
5. **पेपर**
6. **किताबें**
7. **पत्र-पत्रिकाएँ इत्यादि।**

शोध प्रारूप

आधुनिक खोरठा पद्य साहित्य का उद्भव एवं विकास: एक अध्ययन

प्रस्तावित अनुसंधान को निम्नलिखित प्रारूप के अनुसार पूरा करने की योजना है-

प्रथम अध्याय

खोरठा साहित्य का सामान्य परिचय

क) पद्य विधा

ख) गद्य विधा

द्वितीय अध्याय

खोरठा साहित्य की अवधारणा और काल विभाजन

क. प्रारंभिक काल

ख. मध्यकाल

ग. आधुनिक काल

तृतीय अध्याय

खोरठा पद्य साहित्य की विद्याएँ

क. प्रबन्ध काव्य

  1. खण्ड काव्य

  2. महाकाव्य

ख. मुक्तक काव्य

1. कविता

2. गीत

चतुर्थ अध्याय

आधुनिक खोरठा काव्य के विकास के विभिन्न चरण

क. प्रारंभिक चरण

ख. माध्यमिक चरण

ग. तात्कालिक चरण

पंचम अध्याय

आधुनिक खोरठा काव्य का भावगत मूल्यांकन

क. विषय के आधार पर

ख. रस के आधार पर

षष्ठ अध्याय

आधुनिक खोरठा काव्य का कला पक्ष

क. अलंकार

ख. छंद

ग. बिम्ब

घ. काव्य गुण

ङ. काव्य दोष आदि।

शोध निष्कर्ष

परिशिष्ट

i) आधार ग्रंथों की सूची

ii) सहायक ग्रंथों की सूची

iii) पत्र-पत्रिकाओं की सूची

iv) साक्षात्कार

v) चित्रावली

नोट: आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किया जा सकता है।

शोध निर्देशक

डॉ0 अर्चना कुमारी
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

बिनोद करमाली
यू.जी.सी, नेट/जे.आर.एफ
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

आधार ग्रंथों की सूची

1. **ओहदार**, **डॉ0 बी0एन0**, **खोरठा भाषा और साहित्य** (**उद्भव एवं विकास**), **खोरठा भाषा साहित्य अकादमी रामगढ़**, 2007
2. **कुमारी**, **डॉ0 अर्चना**, **खोरठा शिष्ट साहित्य: एक अध्ययन**, **प्यारा केरकेट्टा फाउण्डेशन राँची**, 2015
3. **कुमार**, **डॉ0 बिनोद**, **धोवइयाक धमक**, **झारखण्ड झरोखा राँची**, 2020
4. **गोस्वामी डॉ0 महेन्द्रनाथ**, **आँगठा** (**खण्ड काव्य**), **खोरठा कमिटी बोकारो**, 1994
5. **झा**, **डॉ0 ए0के0**, **खोरठा भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन**, **झारखण्ड झरोखा राँची**, 2012
6. **झा**, **डॉ0 ए0के0**, **खोरठा गइद-पइद संग्रह**, **पृथ्वी प्रकाशन रोहतद न्यू दिल्ली रोड़**, 2020
7. **झा**, **ए0के0**, **खोरठा सहित सदानिक व्याकरण**, **खोरठा ढाकी देतर कमिटि**, **कोठार रामगढ़**, 2010, 2018
8. **झा**, **ए0के0**, **छंद रस अलंकार**, **खोरठा ढाकी छेतर कमिटि कोठार**, **रामगढ़**
9. **झा**, **ए0के0**, **कविता पुरान**, **पुष्पा प्रेस**, **यदुवेष नगर**, **चास**, **बोकारो**, 1994
10. **दिनमणि**, **दिनेश**, **सोहान लागे रे**, **धारा जैना मोड बोकारो**, 2006
11. **पानुरी**, **श्रीनिवास**, **आँखीक गीत**, **पृथ्वी प्रकाशन रोहतक रोड न्यू दिल्ली**, 2019
12. **प्रमाणिक**, **शिवनाथ**, **तातल आर हेमाल**, **खोरठा साहित्य कुटीर**, **बैदमारा**, 1998
13. **प्रमाणिक**, **शिवनाथ**, **रूसल पुटूस**, **बोकारो खोरठा कमिटि**, **बोकारो**, 1985
14. **प्रभाकर**, **गजाधर महतो**, **पुटूस फुल**, **खोरठा ढाकी छेतर कमिटि बोकारो**, 1988
15. **कुमारी**, **शशि**, **जिनगीक डहर**, **यादव कम्प्यूटर**, **जीवजीगंज ग्वालियर**, **म0प्र0**, 2022

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1. **केशरी**, **डॉ**0 **विशेश्वर प्रसाद**, **साहित्य के तत्व और आयाम**, **कमल प्रकाशन राँची**, 1971
2. **गौंझु डॉ**0 **गिरिधारी राम**, **झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत**, **झारखण्ड झरोखा**, 2016
3. **तिवारी**, **भोलानाथ**, **हिन्दी भाषा का इतिहास**, **वाणी प्रकाशन**, 2023
4. **तिवारी**, **उदय नारायण**, **हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास**, **लोकभक्ति प्रकाशन**, 2017
5. **महतो**, **संतोष कुमार**, **एक पथिया डोंगल महुआ**, **रामधन प्रकाशन गांगजोरी बोकारो**, 2005
6. **महतो**, **संतोष कुमार**, **एक मउनी फुल**, **रामधन प्रकाशन गंगजोरी बोकारो**, 1988
7. **शुक्ल**, **आचार्य रामचन्द्र**, **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, **विश्वभारतीय प्रकाश नागपुर**, 1929

खोरठा पत्र-पत्रिकाएँ

1. **मातृभाषा**, **श्रीनिवास पानुरी**, **बरवाअड्डा**, **धनबाद**, 1957
2. **खोरठा**, **श्रीनिवास पानुरी**, **बरवाअड्डा**, **धनबाद**, 1970
3. **तितकी**, **विश्वनाथ दसौंधी** '**राज**', **कतरासगढ़**, **धनबाद**, 1977
4. **करील**, **डॉ**0 **बी**0**एन**0 **ओहदार**, **कतरासगढ़ धनबाद**, 1977
5. **इंजोर**, **धनजंय प्रसाद**, **मधुपूर देवघर**, 1997
6. **सहिया**, **अनिल कुमार** '**विस्थापित**', **बोकारो**, 2002